भजन

इश्क खुमारी आपकी चढ़ी रहे दिन रात
हाथ जोड़ धनी धाम सों मांगू यहीं दिन रात

1– वतन न जाते न सही चरणों राखो पास
सुख खिलवत के दो पिया हमको खासलखास
तुम दूल्हा मैं दुल्हनी,और न जानू बात
इश्क सों सेवा करूं सब अंगों साख्यात
जैसे थे निजधाम में चाहें वहीं दिन रात

2– इश्क बड़ा रे सबन में न कोई इश्क समान
एक तेरे इश्क बिना उड़ गई सब जहान
न्यारा निमख न होवहीं करना पड़े न याद
आशिक को माशूक का कोई इन विध लाग्या स्वाद
तुम हममें हम तुममें रहें सदा साक्षात

3– नाम ही जाको नवरंग ताकी निरत कहूं क्यूं कर
अनेक गुण रंग ल्यावहीं नए नए दिल धर
मुरली बजावे मोरबाई बेनबाई बाजंत्र
तानबाई तान मिलावत निरत जामत इन पर
जैसे थे निजधाम में मांगू यहीं दिन रात